BLEND OF FAITH AND CRIME IN INDIA

DR VARINDER BHATIA

ABSTRACT

Faith is an integral part of life in India. But recent developments indicate that people with criminal bent of mind and political inclinations play with the emotions of innocent people. Women are the easy victims. This article analyses blend of faith and crime in India under the umbrella of dirty game of politics. It tries to reiterate that no one who so ever is above law of the land and constitution.

आस्था के नाम पर कानून व्यवस्था को चुनौती देना और फिर समाज में आपातकालीन परिस्थितियां पैदा करने का देश में पुराना इतिहास रहा है डेरा मामले में बड़े पैमाने पर उपद्रव़आगजनी और हिंसा का जो खुद गरज नजारा देखने में आया, वह देश व् पुरे मानवता के लिये दुखद एवं त्रासद स्थिति है।इस मामले ने एक तरफ हमारे नेतृत्व के नकारेपन एवं वोट बैंक की लालसा को एक बार फिर उभारा है। इसने पर्दे खोल दिए है की किस तरह हमारे नेतृत्व करता चाहे वोह किसी भी विचार धरा से जुड़े हों सत्ता के अन्दर हो या बाहर हों पहले किसी समुदाय विशेष का वोट समर्थन हासिल करने के लिए उसका सहयोग लेते हैं और बदले में उसे अपना अपरोक्ष संरक्षण देते हैं। इसी के बूते पर ऐसे समुदायों के प्रमुख अपना प्रभाव बढ़ाते चले जाते हैं। प्रभाव ही नहीं अपना पूरा साम्राज्य बनाते जाते हैं।

अब तो ऐसे लोगो की एक बड़ी जमात हमारे देश में खड़ी हो चुकी है । आस्था के नाम पर इस देश में ऐसा सबकुछ हो रहा है, जो गैरकानूनी होने के साथ-साथ अमानवीय एवं अनैतिक भी है।वक्त बार बार दस्तक दे रहा है की देश के समजदार व् प्रबुद्ध लोग एक बार यह जरुर सोचे की दुनिया को राह दिखाने वाले अपने देश में इस समय अध्यात्म का कौन-सा रूप विकसित हो रहा है जिसमें बेशुमार दौलत़तरह-तरह के धंधे, अपराध, प्रचार की चकाचैंध और सांगठनिक विस्तार का मेल दिखाई देता है। इसमें सब कुछ है़बस शुद्ध अध्यात्म का चरित्र नहीं है। इस तरह के समूह अपने अनुयायियों या समर्थकों और साधनों के सहारे चुनाव को भी प्रभावित कर सकने की डींग हांकते हैं, और विडंबना यह है कि कुछ राजनीतिक तत्व उनके प्रभाव में आ भी जाते हैं। यह विकृत आस्था और राजनीति के घिनौने रूप का मेल है।

आनन् फानन में बेशुमार दौलत एवं सत्ता का सुख भोगने की लालसा एवं तमाम अपराध करते हुए उनपर पर्दा डालने की मंशा को लेकर आज अनेक लोग आस्था को विकृत एवं बदनाम कर रहे हैंस्वार्थान्ध लोगों ने धर्म का कितना भयानक दुरुपयोग किया है यह सब कुछ दिख रहा है

यह कैसा समाज निर्मित हो रहा है जिसमें अपराधी महिमामंडित होते हैं और निर्दोष सजा एवं तिरस्कार पाते हैं। डेरा प्रकरण धर्म एवं राजनीति के अनुचित घालमेल का घिनौना रूप है। धर्म जब अपनी मर्यादा से दूर हटकर राज्यसत्ता में घुलमिल जाता है फिर वह विष से भी अधिक घातक बन जाता है। राजनीति अपना प्रयोजन सिद्ध करने के लिये अक्सर आस्था की आड में हिंसा की सवारी करती रही है। इस बार भी ऐसा ही हुआ है।

विकृत आस्था और राजनीति का कड़वा कॉकटेल देश के आम लोगो के जटिल समस्याए पैदा कर रहा है

धार्मिक आस्था का प्रभाव सत्ता प्रणाली में सीमित करने के लिए फ्रांस समेत कई देशों में क्रांति हुई है

अमेरिकी नेता थॉमस जेफरसन ने लोकतंत्र में धर्म की भूमिका की बात करते हुए कहा कि धर्म और राज्य के बीच दीवार जरूरी है. उन्होंने कहा धर्म, इंसान और ईश्वर के बीच व्यक्तिगत मामला है लेकिन भारत में यह सब आसान नहीं होगा फिर भी इनमे एक सम्मानतिक दुरी अत्यंत जरुरी है

सामयिक बात यही होगी की राज्यों की सरकारें डेरों का नियमन और साथ ही उनकी उचित निगरानी करें आस्था की आड़ में व्याप्त विकृतियों एवं विसंगतियों से देश को मुक्ति दिलाना वक्त की सबसे बड़ी जरूरत है। निचोड़ में आखिरकार हमारी धार्मिक आस्था और अधिकार इतने अनैतिक क्यों हो चले हैं क्या हमारा यह दायित्व नहीं बनता है कि जिसे हम नाखुदा मान रहे हैं उसकी नैतिकता कितनी अनैतिक हो चली है इसे परखें और समझे।

ऐसे रुझानों से देश के कानून और संविधान का आस्था के बाज़ार में कोई मोल नहीं रह जाएगा। हिंसात्मक विरोध के ऐसे सिलसिले अगर बंद नहीं होंगे तो हमारी लोकतांत्रिक व्यस्था उस भीड़ के हवाले होगी जो दिमागी तौर पर सही फैसला करने में सक्षम नहीं होती है । उस स्थिति से हमें बचना और सबको बचाना होगा सत्ता के चाहवानों को यह बात ज्यादा भली भांति समझनी चाहिए ।

References

1. M. S. Aiyar, Politics and Religion in India, India International Centre Quarterly, Vol. 34, P. 42 - 50, 2007.
2. A Gupta et al., The Role of Religious Appeals in Indian Politics, Indian Journal of Social Science, Vol. 6, P. 112, 2008.
3. Lakshmi, A. Mani, P. Mishra, P. Topalova, The Power of Political Voice: Women's Political Representation and Crime in India, American Economic Journal: Applied Economics, 2012.